िह स्थिता प्रसातस्माद्रितियिक्ष & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855 मित्रिता प्रसातस्माद्रितियिक्ष्यतं M.3,99. द्शातिययः N.23,26. कुसुम- स्तिद्धित् (स्रित + द्धित्) adj स्तिद्दित् (स्रित + द्दित्) adj स्तिद्दित् (स्रित + द्दित्) n. 1) स्तिद्दित्व (स्ति + द्दित्) n. 1) स्तिद्दित्व (स्ति + द्दित्) n. 1) स्ति स्ति (स्ति + द्दित्) n. 1) स्ति (स्ति +

म्रतिथिक्तिया (म्रतिथि + क्रिया) s. die einem Gaste zukommende Ehrenbezeigung: रामलह्मपाया: पश्चार्कुर्वन्नतिथिक्रियाम् R. 1, 25, 19. राज-पुत्राभ्यामकुर्वन्नतिथिक्रियाम् 31, 26.

मितियार्चे N. pr. 1) ein Zuname Divodasa's, welchem die Götter den Çambara zu überwinden helfen: याभिर्मुक्तमितिय्ययं केशोजुर्चे दिन्विद्रासं शम्बर्कृत्य म्रावंतम् R.V.1,112,14. 51,6. 130,7. दिवादासाद्तिय्विग्वस्य राघे: शाम्बरं वसु प्रत्येयभीष्म 6, 47, 22: vgl. शम्बर् — 2) mit Atithigva besiegt Indra den Karańga und Parnaja: वं कर्रज्ञमृत पूर्णियं वधीस्तिजिष्ठयातिय्विग्वस्य वर्त्नी R.V.1,53,8. मुक् गुङ्गुभ्या म्रतिय्वग्वस्य वर्त्नी R.V.1,53,8. मुक् गुङ्गुभ्या म्रतिय्वग्वस्य वर्त्वनी स्पर्माय उत्त वो कर्जुक्ते प्राक्तियम् वर्त्वम्यप्रमुख्य वर्त्व वर्ष्ट्र मुक्तुभ्या मित्रविय्वम्य वर्त्व वर्ष्ट्र प्राक्तियम् प्रान्तियम् वर्ष्ट्र प्राचित्र प्राचित्र

श्रतिथित (von श्रतिथि) n. Gastfreundschaft: मंचित्य तेषामतिथित्व-धर्मम् Draup.3,9. শ্रतिथित्वेन वर्णानां देयं शत्र्यानुपूर्वश: Jäśä.1,107.

म्रतिथिदेव (म्रतिथि + देव) adj. den Gast als Gottheit betrachtend, den Gast verehrend Taitt. Up. 1,11,2.

म्रतिथिधर्म (म्रतिथि + धर्म) m. das Recht, die gerechten Ansprüche eines Gastes M. 3,111. तङ्गस्यतामतिथिधर्म: Pankar. 35, 17.

म्रतियिधर्मिन् (von म्रतियिधर्म) adj. gerechte Ansprüche auf den Namen eines Gastes habend M.3,112.

श्रतिर्थिन् (von 1. श्रत्) 1) adj. wandernd: माध्या श्रीतिथिनीरिष्रि स्पा-र्हा: मुवर्णा श्रनवृद्धन्नेपाः । वृक्स्पितः पर्वतिन्या वितूर्या निर्गा उपे यवमिव स्थिविन्यः ॥ R.V. 10,68,3. — 2) m. N. eines Königs, der zugleich Suhotra heisst, M.12,917. (921. wird er স্থানিখি genannt). — Vgl. স্থানিখি,

मैतियिपति (म्रतियि + पति) m. Gastwirth, hospes: यद्दा म्रतियिपत्तिर्-तियीन्प्रतिपश्यिति AV. 9,6,3. 7,1.

স্থানিযিপুরন (স্থানিয়ি + পুরন) n. die ehrenvolle Aufnahme eines Gastes, das den Menschen darzubringende Opfer, H.822. M.3, 70. 106.

म्रतिथिपूजा (म्रतिथि + पूजा) f. die ehrenvolle Aufnahme eines Gastes: करिष्ये ऽतिथिपूजा वः सर्वेषाम् R.1,9,29.

श्रतियिमस् (von श्रतियि) adj. den Gast erwähnend (von einem Verse): सैषाग्रेट्यतियिमती न सीम्यातिथिमत्यिम्त Air. Ba. 1, 17.

श्रीतियिसत्कार् (श्रीतियि + सत्कार्) m. das Bewirthen eines Gastes Çâs. 7,15 (lies: ेसत्कार्गय). मूर्यिकस्याप्यतियिसत्कार् चकार् Hit. 27,2.

म्रातिद्त्त (म्राति + द्त्त) m. N. pr. ein Sohn Rågådhideja's und ein Bruder Datta's, Hanv. 2033.

- 1. म्रतिर्प (म्रति + र्प) m. zu arger Uebermuth Kan. 50.
- 2. म्रतिदर्भ (wie eben) 1) adj. sehr übermüthig. 2) m. N. pr. einer Schlange Pankar. 170, 23,

श्रीतर्शिन् (श्रात + दर्शिन्) adj. weitsehend: नयनेनातिदर्शिना R.3,74,16. শ্रीतदान (श्रात + दान) n. 1) zu vieles Spenden, zu grosse Freigebigkeit Kin. 50. — 2) grosse Gabe Verz. d. B. H. No. 1218.

म्रतिदीप्य (म्रति + दीप्य) m. N. einer Pflanze, Plumbago rosea, Lin. = रक्तिचित्रकावृत्त Riéan. im ÇKDn.

र्क्रैतिदीर्घ (म्रति + दीर्घ) adj. allzu lang (Gegens. म्रतिक्रस्व) VS.30,22. Suça. 1,23,21. कालं नातिदीर्घम् N.25,16.

श्रतिहर्लम्भ (श्रति + हर्लम्भ [soll allein nicht gebräuchlich sein]) adj. überaus schwer zu erlangen Vop.26, 173.

श्रतिहर् (श्रति + हर्) 1) adj. sehr entfernt H. 1452. - 2) grosse Entfernung: नातिहर् निर्मितिन R. 5,86,12. नातिहर् गला Pankat. 105, 4. नातिहर् पावत्सरमा गव्कृति 142, 12. नातिहर्मतित्रम्य VID. 90. नातिहर् पावत्सरमा गव्कृति 142, 12. नातिहर्मतित्रम्य VID. 90. नातिहर् नातिहर्गन्, नातिहर्णा in der Nähe: नातिहर् च नगरं वनार्माहिलान्ये Hip. 1,51 (MBII. 1,5924: नातिहर्णा न॰ ग्रस्माहि ल॰). नातिहर् त्यावनस्य Çak. 18, 23. Pankat. 51, 15. 175, 1. घाष्रमा नातिहर् औत तस्य R. 3, 17, 16. नातिहर्गदितो वनम् 3, 1, 29. श्रनतिहर् Pankat. 174, 10.

म्रतिदेव (म्रति + देव) m. ein müchtiger Gott: होते देव तं हदनाद्भाव-णाच राज्ञयमाणा द्रावणाचातिदेव: Hariv. 7583 (Langlois: म्रिधेदेव).

श्चित्रेश (von दिश् mit श्चित) m. Hinüberweisung, Vebertragung: त्रपातिरेश eine Vebertragung der Form, eine Gleichstellung in Bezug auf die Form P.7,4,93, Vårtt.3.1,2,48, Vårtt., Sch. वनस्पतिलातिरेश 1,2,51, Sch. भावाभावयारूभयार्प्यतिरेश: eine Vebertragung sowohl dessen was geschehen, als auch dessen was unterbleiben soll, 1,1,57, Sch. स्थान्या- अयं कार्यमारेश न प्राप्नातित्यमतिरेश श्चार्भ्यते 1,1,56, Kåç. स्तेनातिरेश eine Vebertragung des (Namens) Dieb (auf andere Verbrecher) Vivàdak. 92,18. सामान्यातिरेश, विशेषातिरेश Madbus. in Ind.St. I,19,8. ein analogischer Schluss auf etwas Zukünstiges: यथा देवदत्तस्यानेन शल्यमुकृतं तस्मायज्ञदत्तस्याप्ययमेवाहरिष्यतीति प्रकृतस्यानागतेन साधनमितरेश: Suça. 2,558,1—3. Durgâdâsa (sic! ein Scholiast des Vopadeva) im ÇKDa. erklärt श्चितरेश durch श्चन्यधर्मस्यान्यत्र श्चार्यणम् । यथा । इण्वारिक (Vop. 9,16.) इत्यारि: ।

म्रतिधन्वन् (म्रति + धन्वन्) m. N. pr. eines Mannes: म्रतिधन्वा शीनकः Килль. Up. 1,9,3.

श्रतिधृति (श्रति + धृति N. eines Metrums) f. ein Versmaass von 76 Silben: पुरुत्ततिस्वतिधृति: R.V. Paît. 16, 55. Als Beispiel wird ebend. 58. bezeichnet R.V. 1,127, 6, wo die Påda's folgende Vertheilung und Silbenzahl haben: 12, 12, 8 | 8, 8 | 12, 8, 8. Vgl. Sij. zu der Stelle, Manibu. zu VS. 11, 9. 15, 47. und धृति. In der nachvedischen Literatur ist श्रतिधृति ein Metrum von 4 × 19 Silben Colebr. Misc. Ess. II, 163.

म्रतिधेनु (श्रति + धेनु) adj. শ্रतिधेनवे ब्राह्मणाय P.1,4,3, Vårtt. 2, Sch. শ্रतिनामन् (श्रति + নাमन्) m. N. pr. einer der Saptarshi im 6ten Manvantara, HARIV. 436. 14154.

শ্বনিনাষ্ট্ৰ (শ্বনি + নাষ্ট্ৰা) adj. der über die Gefahren hinaus ist ÇAT. Bn. 1,8,1,3.

म्रतिनिचृत् इ. म्रतिनिचृत्.

শ্বনিনির (শ্বনি + নিরা) adj. der einen ungeheuren Schlaf hat, nicht zu erwecken R. 6,37,48.